[83] SEAT No.________ No. of Printed Pages : 2

સરદાર પટેલ યુનિવર્સિટી

એમ.એ. સેમેસ્ટર – ૩ 2017-18 ગુજરાતી પેપર કોડ – PA03SGUJ03

Date : 11\4\2018 Time : 2-00 PM to 5-00 PM Marks : 70

વિષય : અનુવાદ અને સંપાદન

પ્રશ્ન : ૧ [18]

અનુવાદ એટલે શું ? અનુવાદની વિશેષતાઓ અને મર્યાદાઓની ચર્ચા કરો.

અથવા

ટૂંકનોંધ લખો : ૧. અનુવાદકની સજ્જતા ૨. ગુજરાતીમાં અનુવાદપ્રવૃત્તિ

પ્રશ્ન : ૨ [18]

સંપાદન એટલે શું ? સંપાદનનું સ્વરુપ સમાજાવી સાહિત્ય સંપાદનની વૈવિધ્યતાનો ખ્યાલ આપો

અથવા

ટૂંકનોંધ લખો : ૧. સંપાદકની સજ્જતા ૨. ગુજરાતીમાં સંપાદનપ્રવૃત્તિ

પ્રશ્ન : ૩ [17]

મધ્યકાલીન સાહિત્યનું સંપાદન કરતી વખતે સંપાદકે કઇ કઇ તકેદારી રાખવાની છે ? વિગતે ચર્ચો.

અથવા

લોકસાહિત્યનું સંપાદન પરત્વે કઇ બાબતોનું ધ્યાન રાખવાનું છે ? સમીક્ષા કરો.

[પાછળ જુઓ]

No. of Printed Pages : 2

પ્રશ્ન : ૪

નીચેની આપેલી કૃતિઓમાંથી કોઇ એક વિશે લખો

હિન્દી બોધકથાનો ગુજરાતીમાં અનુવાદ કરો. [17]

किसी गाँव में एक ताले वाले की दुकान थी। ताले वाला रोजाना अनेकों चाबियाँ बनाया करता था। ताले वाले की दुकान में एक हथौड़ा भी था। वो हथौड़ा रोज देखा करता कि ये चाभी इतने मजबूत ताले को भी कितनी आसानी से खोल देती है। एक दिन हथौड़े ने चाभी से पूछा कि मैं तुमसे ज्यादा शक्तिशाली हूँ, मेरे अंदर लोहा भी तुमसे ज्यादा है और आकार में भी तुमसे बड़ा हूँ लेकिन फिर भी मुझे ताला तोड़ने में बहुत समय लगता है और तुम इतनी छोटी हो फिर भी इतनी आसानी से मजबूत ताला कैसे खोल देती हो। चाभी ने मुस्कुरा के ताले से कहा कि तुम ताले पर ऊपर से प्रहार करते हो और उसे तोड़ने की कोशिश करते हो लेकिन मैं ताले के अंदर तक जाती हूँ, उसके अंतर्मन को छूती हूँ और घूमकर ताले से निवेदन करती हूँ और ताला खुल जाया करता है। वाह! कितनी गूढ़ बात कही है चाभी ने कि मैं ताले के अंतर्मन को छूती हूँ और वो खुल जाया करता है। दोस्तों आप कितने भी शक्तिशाली हो या कितनी भी आपके पास ताकत हो, लेकिन जब तक आप लोगों के दिल में नहीं उतरेंगे, उनके अंतर्मन को नहीं छुयेंगे तब तक कोई आपकी इज्जत नहीं करेगा।

અથવા

નીચેની હિન્દી કવિતાનો ગુજરાતીમાં ભાવાનુવાદ કરો.

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ कर मत भागो तुम।
कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

-- हरिवंशराय बच्चन